CHAPTER 4, गूंगे
PAGE 51, अभ्यास

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. **गूँगे ने अपने स्वाभिमानी होने का परिचय किस प्रकार दिया?**

उत्तर- गूंगे ने अपने सीने पर हाथ रखकर संकेत किया कि उसने आज तक किसी के सम्मुख हाथ नहीं फैलाया है । उसने अपनी भुजाओं को दिखाया और संकेत किया कि उसने मेहनत करके खाया है । उसने पेट बजाकर बताया कि उसने यह सब अपने पेट के लिए किया है । इस प्रकार संकेतो से उसने बताया की वह स्वाभिमानी है

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. **'मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूँगेपन की प्रतिच्छाया है।' कहानी के इस कथन को वर्तमान सामाजिक परिवेश के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- संवेदनशीलता मनुष्य का स्वाभाविक गुण है । संवेदनशीलता के कारण मनुष्य में दूसरों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव उत्पन्न होता है । वर्तमान समय में मनुष्य के

अंदर संवेदनशीलता ख़त्म होती जा रही है । संवेंदनशीलता की भावना मनुष्य के भीतर मूक अवस्था में रहती है. यदि कभी वह बहार आ भी जाती है तो मनुष्य के व्यव्हार में नहीं आ पाती है । इसलिए कवि ने कहा है कि मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूंगेपन की प्रतिछाया के रूप में विद्यमान है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. **'नाली का कीड़ा! 'एक छत उठाकर सिर पर रख दी' फिर भी मन नहीं भरा।'- चमेली का यह कथन किस संदर्भ में कहा गया है और इसके माध्यम से उसके किन मनोभावों का पता चलता है?**

उत्तर- चमेली ने दया करके गूंगे को अपने पास रख लिया था । गूंगे का स्वभाव था कि वह कुछ समय के लिए चला जाता था और फिर कुछ समय बाद वापस आ जाता था । एक दिन जब गूंगा फिर बिना बताये चला गया तब चमेली यह कथन कहती है । उसे लगता है कि गूंगा नाली के कीड़े **की तरह** है । उसे **चाहे** जितना भी बेहतर जीवन दे दो मगर वह गन्दगी को ही पसंद करता है । चमेली के इस कथन से पता चलता है कि वह गूंगे जैसे लोगों के प्रति क्या सोच रखती है । वह उस कीड़े के समान समझती है । उसे लगता है **उसने गूंगे को अपने यहां पे आश्रय**

देकर एहसान किया है जिसके बदले वह गूंगे को जो चाहे कह सकती है और उसके साथ कर सकती है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. **यदि बसंता गूँगा होता तो आपकी दृष्टि में चमेली का व्यवहार उसके प्रति कैसा होता?**

उत्तर- यदि बसंता गूंगा होता तो हमारी दृष्टि में चमेली का व्यवहार इसके विपरीत होता । वह बसंता को मूक -बधिरों के विद्यालय में भेजती । उसे गली में नहीं छोड़ देती जहाँ लोग मारते । उसे सक्षम बनाने का प्रयास करती । वह प्रयत्नं करती की उसका बच्चा अन्य बच्चों के साथ घुल -मिलकर रहता तथा लोग उसे दया की दृष्टि से नहीं देखते ।

PAGE 52, अभ्यास

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. **'उसकी आँखों में पानी भरा था। जैसे उनमें एक शिकायत थी, पक्षपात के प्रति तिरस्कार था।' क्यों?**

उत्तर- गूंगा चमेली को माँ के समान ही समझने लगा था । आरम्भ में गूंगे को चमेली में करुणामयी माँ का रूप दिखा था । परन्तु चमेली के साथ रहते हुए उसे एहसास होने लगा की वह उसके लिए कुछ नहीं है । जब बसंता ने गूंगा पर चोरी का इलज़ाम लगाया,तो उसे उम्मीद थी कि चमेली उसका पक्ष लेगी । परन्तु इसके विपरीत चमेली ने अपने बेटे का पक्ष लिया । गूंगे को चमेली के इस व्यवहार ने दुखी ही नहीं किया बल्कि उसकी आँखों में पानी भी भर दिया । चमेली ने उसकी आँखों में अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार की शिकायत पढ़ ली थी । वह चमेली के पक्षपात भरे व्यवहार से आहत था और चमेली लिए उसमें तिरस्कार भी था।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. **'गूँगा दया या सहानुभूति नहीं, अधिकार चाहता था'- सिद्ध कीजिए।**

उत्तर- गूंगे ने कई बार संकेत के माध्यम से बताया कि वह दया या सहानुभूति नहीं अधिकार चाहता था । अपनत्व से अधिकार उपजता है । चमेली उसे दया करके अपने पास रखती है परन्तु गूंगा उसे अपनत्व समझता है । वह चमेली से अधिकार चाहता है । चमेली द्वारा बसंता का पक्ष लेने के

पक्षपातपूर्ण व्यवहार के प्रति तिरस्कार गूंगे की आँखों में आँसू के रूप में स्पष्ट दिखाई दे जाता है। वह केवल अधिकार चाहता है जो उसे प्रेम मान-सम्मान तथा समानता का भाव देता है । दया या सहानुभूति उसे समानता का भाव नहीं देती है । इसलिए वह दया या सहानुभूति से दूर भागता है।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. **'गूँगे' कहानी पढ़कर आपके मन में कौन से भाव उत्पन्न होते हैं और क्यों?**

उत्तर- गूंगे की कहानी पढ़ने के बाद उसके लिए सहानभूति उत्पन्न होती है । परन्तु वह सम्मान का पात्र है सहानुभूति का नहीं है। यदि उसे सही लोग तथा सही मार्गदर्शन मिलता तो अन्य लोगो की तरह उसका जीवन भी सामान्य होता । उसके जीवन में मौजूद लोगो के व्यव्हार के कारण वह सहानुभति का पात्र बन जाता है । गूंगा प्रतिदिन लड़ता है क्यूंकि समाज सम्मान का अधिकार नहीं देता है. कहानी के दृश्य उसे सहानभूति का पात्र बना देते है

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. **कहानी का शीर्षक 'गूँगे' है, जबकि कहानी में एक ही गूँगा पात्र है। इसके माध्यम से लेखक ने समाज की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार आज समाज में गूंगे लोग उपेक्षित रहते है। दिव्यांग लोगो पर समाज द्वारा अत्याचार होता है परन्तु लोग देखते रहते है। सभी लोगो के मन में दिव्यांग लोगो के प्रति सहानभूति होती है । परन्तु समय आने पर वही लोग दिव्यांग लोगो शोषण करते है । ऐसे लोग सवेंदना तथा मानवता का त्याग कर देते है । वे नहीं जानते की उनका दिव्यांग लोगो के लिए दायित्व्य होता है । अतः लेखक ने गूंगे बोलकर समाज में व्याप्त ऐसे लोगों की ओर संकेत किया है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:9

9. **यदि 'स्किल इंडिया' जैसा कोई कार्यक्रम होता तो क्या गूंगे को दया या सहानभूति का पात्र बनना पड़ता?**

उत्तर- यदि 'स्किल इंडिया' जैसा कोई कार्यक्रम होता तो किसी भी गूंगे या हम कह सकते हैं किसी भी विकलांग को सहानुभूति का पात्र नहीं बनना पड़ेगा ।समाज में विकलांग के लिए अनेक प्रकार के सहयोग हो सकते हैं । उनके उत्थान के लिए नौकरी में

आरक्षण ,विद्यालय ,कॉलेज तथा बसों में आरक्षण की व्यवस्था भी की जा सकती है । उनका मज़ाक न उड़ाया जाए उनके साथ बुरा व्यवहार न किया जाए । न ही उनके स्वाभिमान पर चोट पहुंचे और न ही उन्हें किसी की सहानुभूति की जरूरत पड़े । उन्हें सामान्य नागरिक की तरह जीने दिया जाए । स्किल इण्डिया होने से किसी भी विकलांग को सम्मान का जीवन मिल पायेगा ।

10. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-
(क) करुणा ने सबको ..... जी जान से लड़ रहा हो।
(ख) वह लौटकर चूल्हे पर ..... आदमी गुलाम हो जाता है।
(ग) और फिर कौन ..... ज़िंदगी बिताए।
(घ) और ये गूँगे ..... क्योंकि वे असमर्थ हैं?

उत्तर
(क) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ रांगेय राघव द्वारा लिखित रचना 'गूँगे' से ली गई है। चमेली की गली में एक बालक आ धमकता है। वह गूँगा है। वह गली की औरतों को अपनी आपबीती संकेतों के माध्यम से बताता है। उसकी कोशिश देखकर लोगों को करुणा हो आती है।
व्याख्या- वह लोगों को अपने विषय में बताने की भरसक कोशिश कर रहा है। उसे देखकर लोगों को उस पर दया हो आती है। वह इसके लिए बोलने का प्रयास करता है लेकिन अपने इस प्रयास में कामयाब नहीं हो पाता है। उसके मुँह से कान को चीरने वाली आवाज़ निकलती है। यह आवाज़ कौवे के स्वर जैसी कर्कश और काँय-काँय के अतिरिक्त कुछ नहीं होती। लेखक उसके बोलने के प्रयास में मुख से निकलने वाली आवाज़ को और भी स्पष्ट तरीके से बताता है। वह कहता है कि उसके मुख से अस्पष्ट ध्वनियाँ निकल रही हैं। ये ध्वनियाँ किसी को समझ नहीं आती हैं। ऐसा लगता है कि आदिम मानव बोलने का प्रयास कर रहा हो। लेखक कहता है कि मानो वह आदिम मानव अपने में उठने वाले विचारों को बताने के लिए भाषा का निर्माण करने के आरंभिक चरण में हो।

(ख) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ रांगेय राघव द्वारा लिखित रचना 'गूँगे' से ली गई है। चमेली इस पंक्ति में गूँगे के विषय में सोच रही है।
व्याख्या- चमेली खाना बनाने के लिए लौट आती है। वह गूँगे की स्थिति के बारे में सोचती है। उसका ध्यान चूल्हे की आग पर जाता है। वह सोचती है कि इस आग के कारण ही पेट की भूख मिटाने के लिए खाना बनाया जा रहा है। यही खाना उस आग को समाप्त करता है, जो पेट में भूख के रूप में विद्यमान है। इसी भूख रूपी आग के कारण एक आदमी दूसरे आदमी की गुलामी स्वीकार करता है। यदि यह आग न हो, तो एक आदमी दूसरे आदमी की गुलामी कभी स्वीकार न करे। यही आग एक मनुष्य की कमज़ोरी बन उसे झुका देती है।

(ग) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ रांगेय राघव द्वारा लिखित रचना 'गूँगे' से ली गई है। चमेली इस पंक्ति में गूँगे के विषय में सोच रही है। बसंता ने गूँगे पर चोरी का आरोप लगाया है। चमेली जब पूछती है, तो वह कुछ नहीं कह पाता है। चमेली ऐसे ही चली जाती है।
व्याख्या- जब गूँगा उसकी बात का उत्तर नहीं दे पाता है, तो वह सोचती है कि यह मेरा

अपना नहीं है। अतः मुझे इसके बारे में इतना सोचने की आवश्यकता नहीं है। यदि उसे हमारे साथ रहना है, तो उसे हमारे अनुसार रहना पड़ेगा। इस तरह सोचकर चमेली सोचती है कि नहीं तो उसके कुत्तों के समान दूसरा का झूठा खाकर ही जीवनयापन करना पड़ेगा।

(घ) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ रांगेय राघव द्वारा लिखित रचना 'गूँगे' से ली गई है। चमेली इस पंक्ति में गूँगे के विषय में सोच रही है।
व्याख्या- चमेली गूँगे के बारे सोची है कि इस प्रकार के गूँगे पूरे संसार में विद्यमान हैं। ये अपनी बात कहने में असमर्थ हैं। इनके पास कहने के लिए बहुत कुछ है परन्तु अपनी लाचारी के कारण कह नहीं पाते हैं। इनके पास बोलने की शक्ति ही नहीं है। ये न्याय तथा अन्याय के मध्य भेद सरलता से कर सकते हैं क्योंकि इनका हृदय इस विषय में सोचने-समझने में सक्षम है। ये भी अपने साथ हिंसा करने वाले को जवाब देने की इच्छा और क्षमता रखते हैं। परन्तु उस हिंसा का विरोध नहीं कर सकते हैं। कारण इनके पास आवाज़ नहीं है। जो है, उसका कोई अर्थ नहीं निकलता है। आज यदि देखा जाए, तो समाज में इनके अतिरिक्त और भी गूँगे हैं। वे जीवनभर शोषण गूँगों के समान झेलते रहते हैं, उसका विरोध नहीं करते।

11. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-
(क) कैसी यातना है कि वह अपने हृदय को उगल देना चाहता है, किंतु उगल नहीं पाता।
(ख) जैसे मंदिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती, वैसी ही उसने भी कुछ नहीं कहा।

उत्तर
(क) चमेली सोचती है कि गूँगे के लिए यह कितना कष्ट से भरा है। ऐसी स्थिति उसके लिए यातना के समान है। वह अपने हृदय में विद्यमान हर बात को बता देना चाहता है लेकिन कह नहीं पाता। उसके पास आवाज़ नहीं है। अतः बात उसके हृदय में अंदर ही रह जाती है।

(ख) चमेली गूँगे से प्रश्न का उत्तर माँगती है लेकिन वह कुछ नहीं बोलता है। चमेली उसकी स्थिति मंदिर में रखे देवता की मूर्ति के समान मानती है। उस मूर्ति के आगे मनुष्य अपने सुख-दुख सब कहता है लेकिन उसे वहाँ से कभी कोई उत्तर नहीं मिलता है। बस यही स्थिति उसके साथ भी है। गूँगे को कुछ भी कहो वह कुछ नहीं कहता क्योंकि उसे कुछ सुनाई नहीं देता है।